डिप्लोमा इन आयुर्वेद फार्मेसिस्ट (द्वितीय वर्ष)

प्रथम प्रश्न पत्र

रस शास्त्र एवं भैषज्य–कल्पना

कुल अंक–100

रसशास्त्र–

1– रस – रस शब्द की निरूक्ति रस के पर्याय, प्राप्ति स्थान, योगिकों का स्वरूप, नैसर्गिक और कंचुकारव्य दोष, ग्राह्याश्रय स्वरूप शोधन, अष्ट संस्कार, गति और वंघ। कज्जली रस पर्पटी, स्वर्ण पर्पटी, ताम्र पर्पटी, विजय पर्पटी, पंचामृत पर्पटी, रस पुष्प, रस कपूर, रस सिदूर, मकरध्वज, सिद्ध मकरध्वज, इनकी निर्माणाविधि, मात्रा, गुण और आभ्यान्तरिक प्रयोग का समुचित पाना। हिंगुलोत्थ रस का सम्पक ज्ञान।

अ) आयुर्वेद में वर्णित विभिन्न अकार्बनिक द्रव्यों का प्रारभिक अध्ययन, विशेषता, उनके योग, शुद्धता, परीक्षण एवं मानक।

ब) रसशास्त्र में वर्णित कार्बनिक द्रव्यों का प्रारम्भिक अध्ययन, विशेषतः उनकी पहचान, शुद्धता परीक्षण एवं मानक।

2– महारस आदि–

1. महारस, उपरस, साधारण रस के अन्तर्गत परिगणित द्रव्यों का स्वरूप, प्राप्ति स्थान, भेद, शोधन, मारण, सत्वपतिन गुण, कर्म और मात्रा का ज्ञान।

2. स्वर्ण बंग, रसमाणिक्य, श्वेत पर्पटी आदि की निर्माण विधि, गुण और मात्रा का ज्ञान।

3– धातु और उपधातु–

स्वर्ण, रजत, ताम्र, लौह, नाग, बंग, यशद, पूर्ति लौह तथा कास्य, पीतल आदि मिश्र लौह के प्राप्ति स्थान, स्वरूप, भेद, शाधन, मारण, अमृतीकरण, गुण और मात्रा का ज्ञान।

4– रत्नोपरत्न आदि–

माणिक्य, मुक्ता, प्रवाल, तार्क्ष्य, पुष्पराग, वज्र, नीलम गोमेद, वैद्र्य आदि रत्नों, वैकान्त, सूर्यकान्त, राजावंत, पैरोज, स्फटिक, व्योमश्मि, पालक रूधिर, पुस्तिका सुगंधित तुष्कान्त आदि उपरत्नों, शक्ति शंख, वराटिका, दुग्ध पाषाण, गोदन्ती, मृगश्रृग, कोषयाश्म, वरश्मि तथा सुधा वर्ग के अन्तर्गत आये हुए द्रव्यों का परिचय, प्राप्ति स्थान, स्वरूप, शोधन, मारण, पिष्टीकरण, गुण और मात्रा का ज्ञान।

भैषज्य कल्पना–

1. निम्नांकित औषधकल्पों का परिचय, परिभाषा, निर्माण विधि, मात्रा, आमयिक प्रयोग, अनुपान आदि का विस्तृत ज्ञान–औषधियूष, अर्क, पानक, शार्कर, प्रमथ्या, रसकिया, फणित, अवलेह, धनसत्व, गुडपाक, चूर्ण वटिका, गुटिका, वटक, पिण्ड, एनलुकल्पक, लवणकल्प, मासिकल्प, अयस्कृति, क्षारसूत्र निर्माण तथा अन्य प्रचलित कल्प।

2. स्नेह कल्पना में द्रव, कल्फ, क्वाथ, स्नेह, दधि और क्षीर आदि के ग्रहण का नियम, स्नेह पाक का क्रम काल और प्रकार। विभिन्न स्नेहों की मूर्च्छना, स्नेहसिद्धि के लक्षण, कतिपय धृत और तैल के योग।

3. संधान कल्पना में आसव, अरिष्ट, सुरा, सीधु, वारूणी, प्रसन्ना, कादम्बरी, भेदक, जंगल, सुरासच, मद्य, अलकोहल आदि मद्यवर्गीय कल्पों, शुक्त, आरनाल, कांजिक, धान्याल तुषोदक प्रभृति शुक्तवर्गीय कल्पों के निर्माण आदि का ज्ञान।

4. पथ्य कल्पना में मण्ड, पेया, यवागू विलेपी, कृशरा, अन्न भक्त, यूषरस, खण्ड, राग,षाडव, केशवार, तक्र, उवश्वित्, मथित, कदर, दधि, कूर्चिका आदि कल्पकों का निर्माण ज्ञान।

5. वाह्य प्रयोग कल्पों में विधि लेप प्रकार, उनका निर्माण व प्रयोग विधि, शत घोल, व्रह् मधौतघृत, मलहर, उपनाह सिमिथतैल की निर्माण विधि।

6. निम्न विधियों का सम्यक् ज्ञान– (क) विलयन (लोशन)– विभिन्न औषधियों के विलयन का निर्माण।

(ख) वर्तिका (सपोजिटरोज)– विशेष औषधियों की वर्तिकाओं का निर्माण।

(ग) लेप– लेप के भेद तथा निर्माण विधि, प्रलेप (प्लास्टर) की निर्माण विधि, पेरिस प्रलेप की निर्माण एवं काटने की विधि, उपनाह की प्रयोग विधि।

7. अनुपान– परिभाषा, अनुपान विधि एवं मात्रा, साबूदाना, जौ का पानी, अलसी की चाय, तुलसी व अदरख की चाय, शिकंजीन, चुने का पानी, चावल का मांड़ आदि का निर्माण।

8. रस, रसायन एवं सिद्ध योग–मृत्युंजय, सर्वज्वर हर लौह, संजीवनी, त्रिभुवनकीर्ति, आनंद भैरव, प्रतापलंकेश्वर, रामवाण, नवायस लौह, पुनर्नवा मंडूर, सप्तामृत लौह, कपूर रस, इच्छा भेदी, जलोदरारि, श्वासकुठार, लक्ष्मी विलास, बृहतवात चिन्तामणि, कस्तुरी भैरव व बसंतमालती, वसंद कुसुमाकर, सूतशेखर ह्रदयार्णव, गर्मपाल, कुमार कल्याण, राजमृगांक–इनकी मात्राओं एवं आमयिक प्रयोग का ज्ञान।

9. औषधि मिश्रण पद्धति – औषधदान व्यवस्था, सांकेतिक चिन्हों का ज्ञान, व्यवस्था पत्र लिखने का ढंग, औषधियों को अलमारी आदि में स्वच्छतापूर्वक व्यवस्थित ढंग से रखने का ज्ञान, उन्हें पहचानने की विधि विशौषधि रखने की रखने की स्वतंत्र व्यवस्था।

10. औषधि–संग्रह रजिस्टर की पूर्ति एवं संरक्षण, चिकित्सालय में प्रयुक्त होने वाली औषधियों की सूची (इन्डेण्ट) का निर्माण, स्थानीय औषधियों की संग्रह, संरक्षण आदि विधि।

क्रियात्मक–

1. रस द्रव्यों का संग्रह एवं प्रत्यक्ष दर्शन।
2. रसशास्त्र में प्रयुक्त शोधन, मारण, सत्वपातन आदि का प्रदर्शन।
3. रसशास्त्र में वर्णित विविध मान, वर्तमान मान।
4. अकार्बनिक द्रव्यों की पहचान तथा शुद्धता परीक्षण।
5. आर्सनिक लेड, क्लोरीन, आइरन, पारद आदि की उपस्थिति ज्ञात करने हेतु परीक्षण।
6. स्वरस, कल्क, फॉट, हिम, बंडगपानी, आदि एवं विभिन्न अनुपानों एवं पथ्यों का निर्माण।

आलोक्ष्य ग्रंथ–

1. प्रत्यक्षौषधि निर्माण–पं0 विश्वविद्यालय जी द्विवेदी।
2. द्रव्यगुण विज्ञान (परिभाषा खण्ड)–यादव जी कृत।
3. भैषज्य कल्पना विज्ञान–श्री अग्निहोत्री।
4. शारंगधर संहिता (उपयोगी अंश)।
5. आसवारिष्ट विज्ञान।
6. परिभाषा प्रदीप।
7. भाव प्रकाश (प्रकरण –7)।
8. रमतरंगिणी।
9. रसामृतम।